बच्चों का लेखन पोर्टफ़ोलियो : एक विश्लेषण

कमलेश चंद्र जोशी

यह लेख कक्षा 5 के बच्चों के साथ लेखन के सन्दर्भ में किए गए काम प्रस्तुत करता है। ये बच्चे ऐसे थे जो कक्षा 5 के स्तर तक तो पहुँच गए थे लेकिन फिर भी पढ़ने और लिखने में कमज़ोर ही थे। इस स्तर पर स्कूल में शुरू की गई पढ़ने की घण्टी और लेखन के अभ्यासों से बच्चों की लेखन क्षमता में कुछ विकास तो हुआ लेकिन यह अपेक्षा से कम था। बच्चों के लेखन नमूनों का विश्लेषण करते हुए लेखक बताते हैं कि बच्चों के लेखन में विस्तार और बेहतरी के लिए लेखन के नियमित अभ्यास और बच्चों द्वारा किए गए कामों पर शिक्षक का बातचीत करना ज़रूरी है। यह भी ज़रूरी है कि बच्चों को साथ शुरुआती कक्षाओं से ही स्वतंत्र लेखन पर अभ्यास कराए जाएँ। कक्षा में लिखने-पढ़ने पर गहनता से काम करने के लिए किस तरह के संसाधनों, प्रयासों व प्रक्रियाओं की ज़रूरत होती है, इन बिन्दुओं पर भी लेख प्रकाश डालता है। -सं.

भाषा व प्रारम्भिक साक्षरता के वर्तमान विमर्श में सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना, इन सभी कौशलों को साथ-साथ विकसित होने वाली प्रक्रियाओं के रूप में देखा जाता है। अध्येताओं के बीच यह आम सहमति है कि भाषा के सभी कौशल एक दूसरे से जुड़े हैं और एक दूसरे को समृद्ध भी करते हैं। अतः इन्हें एक सम्पूर्णता में देखे जाने और इसके अनुसार ही कक्षा में काम करने पर ज़ोर दिया जाना चाहिए। इसको ध्यान में रखते हुए उत्तराखंड के ऊधम सिंह नगर ज़िले में शिक्षकों के एक समूह के साथ 2014-15 में दो कार्यशालाएँ व समय-समय पर अकादमिक बैठकें आयोजित की गईं। कार्यशाला के बाद कुछ स्कूलों में नियमित भ्रमण कर अध्यापकों के साथ कुछ साझा काम भी किया गया।

इनमें से एक अध्यापक, जिन्होंने कार्यशाला के दौरान रुचि प्रदर्शित की थी, के स्कूल की कक्षा 5 के साथ काम किया। वे चाहते थे कि हम उनके साथ नियमित तौर पर कार्य करें। विद्यालय में नामांकित 47 बच्चों में से अधिकतर बच्चे हाशियाकृत सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से थे व उनके माता-पिता मज़दूरी करते थे।

कार्यशाला में हुई बातचीत के अनुरूप विद्यालय में एक छोटा पुस्तकालय स्थापित किया गया और बच्चों के लिए 'पढ़ने की घण्टी' भी शुरू की गई। यह बच्चों के लिए पढ़ने का लगभग नियमित अभ्यास बनी।

कक्षा 5 के दस बच्चों में से आठ ही नियमित रूप से स्कूल आते थे। सभी बच्चों के लेखन को संकलित कर प्रत्येक का एक पोर्टफ़ोलियो बनाया गया। इस लेख में इन आठ में से पाँच विद्यार्थियों के लेखन के नमूनों को लेकर, लेखन की प्रक्रिया और लेखन में हुए विकास को समझने का प्रयास है। बाक़ी 3 के नमूने इसलिए नहीं लिए गए क्योंकि उनके लेखन नमूनों जैसे उदाहरण इन 5 नमूनों में भी दिख रहे थे। बच्चों के लेखन के इन्हीं पोर्टफ़ोलियो में से दो नमूनों, एक शुरुआती और दूसरा सत्रान्त, का गहरा परीक्षण इस लेख में किया है।

काम की शुरुआत

बच्चों के साथ इस कार्य में पहली चुनौती यह थी कि पढ़ने की घण्टी के दौरान उन्होंने किताबें पढ़ना तो शुरू कर दिया था, पर स्वतंत्र रूप से लिखने का उन्हें कोई अनुभव नहीं था। उन्होंने किसी बात, कहानी, आदि को ख़ुद से सोचकर लिखने के कोई प्रयास नहीं किए थे।

लिखने की शुरुआत के लिए जो किताब वे पढ़ रहे थे, उसके बारे में लिखने का सुझाव दिया गया। मसलन, वह किताब कैसी लगी? या किताब पर चर्चा के दौरान जो ख़ुद के अनुभव, विचार उभरे, उन्हें लिखें; या फिर किसी चित्र को देखकर लिखें; या उनके मन में कोई आसपास का अनुभव या कहानी आती है तो उसे लिखें। इस तरह कुछ-कुछ स्वतंत्र लेखन शुरू हुआ और हर बच्चे ने अपने मन से कुछ-न-कुछ लिखने का प्रयास किया। धीरे-धीरे बच्चे किताबों को देखकर लिखने की बजाय ख़ुद से लिखने के प्रयास करने लगे। यहाँ तक पहुँचने में उन्हें लगभग एक से डेढ़ महीने का समय लगा। स्वतंत्र लेखन के ऐसे अभ्यास महीने में 4-5 बार होते थे। यानी, हमारे इस 4-5 महीनों के काम में कुल 16 से 20 अभ्यास हुए और यह सभी उनके पोर्टफ़ोलियो में रखे जाते रहे।

आगे तालिका में विद्यार्थियों के शुरुआती लेखन और सत्र के अन्त के लेखन के नमूने दिए गए हैं।

इनको पढ़ते हुए यह सोचना होगा कि हम बच्चों के लेखन को कैसे समझें। इन नमूनों में बच्चों की वर्तनी, व्याकरण, आदि की थोड़ी-बहुत अशुद्धियाँ थीं, हमने उन्हें महत्त्वपूर्ण नहीं माना। हालाँकि, यहाँ उनके लेखन को सुधारकर प्रस्तुत किया गया है। जैसा कि भाषा सीखने की राह में ज़रूरी है, उनके लेखन में विषयवस्तु, विचारों की स्पष्टता, निरन्तरता (कोहेरेंस) आदि को हम समझने का प्रयास कर रहे हैं।

तालिका 1

विद्यार्थी	शुरुआती लेखन	सत्र के अन्त का लेखन
1	एक गाँव था। उसमें एक पीपल का पेड़ था। उस पेड़ पर एक छत्ता था। स्कूल में जब बच्चे आ रहे थे तो मधुमक्खियाँ उड़कर जा रहीं थी तो एक लड़की ने देख लिया और बोली वहाँ देखो। सब देखने लगे। वहाँ से एक आदमी आ रहा था बोला बेटे क्या? उन्होंने कहा कि- वो देखो। आदमी बोला यह काट लेती है। फिर सूजन आ जाती और बच्चे घर चले गए।	तालाब के बीचो-बीच में एक मगरमच्छ बैठा था। नाश्ते का समय हो गया था। पानी में एक मछली आ रही थी। मगरमच्छ मछली को देखने लगा। मछली तैरती रही फिर वह आगे जाने लगी। मगरमच्छ ने आँखें निकाल दीं। मछली डरने लगी फिर मगरमच्छ ने मछली को खाने के लिए कदम बढ़ाया। मगरमच्छ ने मछली को खा लिया।
2	एक बार की बात है। एक था चूहा। एक थी बिल्ली। बिल्ली चूहे को खाने लगी। बिल्ली के हाथ में चूहा नहीं आया। बिल्ली रोया करती म्याऊँ-म्याऊँ। बिल्ली को दूसरा चूहा दिखा। बिल्ली खुश हुई कि मैं ये चूहा खाऊँगी। चूहे की लात टूटी हुई थी। चूहा धीरे-धीरे चल रहा था। बिल्ली ने चूहे को खा लिया।	एक बार की बात है एक पेड़ पर एक चिड़िया रहती थी और वह बोल सकती थी। एक दिन वह एक नदी के पास पानी पी रही थी। तभी वहाँ एक मगरमच्छ आ गया और चिड़िया को खाने के लिए भागा। चिड़िया उड़ गई तब वह उड़कर अपने घोंसले में आ गई और छिप गई। चिड़िया को गुदगुदी होने लगी। जब उसने देखा कि उसके नीचे एक गिलहरी थी और

		चिड़िया बोली, ए छोटे-से बच्चे तुम यहाँ क्या कर रहे हो? गिलहरी बोली, मेरे माता-पिता खो गए हैं और मैं अपने घर का रास्ता भी नहीं जानती। तब चिड़िया बोली, मैं तुम्हें घर छोड़ आऊँगी। चिड़िया गिलहरी को उसके घर पर छोड़ आई और वह दोनों दोस्त बन गईं।
3.	किसी गाँव में एक लड़का रहता था। वो रोज नदी में नहाने जाता था। एक दिन उसे मगरमच्छ ने खा लिया। उसकी मम्मी उदास थी। मेरा बेटा कहाँ गया। दूसरे दिन मगरमच्छ रेत पर लेट रहा था। उस लड़के के पास चाकू था। उसने मगरमच्छ का सीना चीर कर बाहर निकल आया। उसने अपने मम्मी-पापा को यह सारी बात बताई। अब वो अपने बेटे को स्कूल के अलावा और कहीं नहीं जाने देते।	एक आम का पेड़ था। आम बहुत लगे थे। एक दिन दो लड़के आम खाने निकले। एक लड़के ने आम का पेड़ देखा और वे दोनों आम खाने गए। दोनों ने बहुत सारे आम खाए। एक लड़का बोला, हम आम घर पर भी ले जाएँगे और घर पर आम खाएँगे। और दोनों घर पर आम ले गए। दोनों लड़कों ने खूब सारे आम खाए। उन्होंने सोचा अब हम बेर खाने चलते हैं, फिर दोनों बेर खाने चल पड़े। और दोनों को रास्ते में उन्हें बेर दिखाई दिए। और दोनों लड़के बेर खाने लगे और बेर घर ले गए। उनको बहुत मजे आए थे। उनकी माँ बोली, ये आम और बेर कहाँ से ले आते हो? आज मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी और आम का अचार भी डालेंगे।
4.	एक बहुत बड़ा स्कूल था। उसमें बहुत सारे लोग पढ़ते थे। उसमें तीन लड़के ऐसे थे वो पेपर में फर्स्ट आते थे और उनके नाम थे– रोहन, सोहेब, सोनू। इसके अलावा कोई फर्स्ट नहीं आता था और वो तीनों बहुत पढ़ते थे। जब पेपर आते थे तो वो तीनों जने बहुत जल्दी कर लेते थे। उन तीनों को पेपरों में बहुत नंबर मिलते थे और उनके अलावा और किसी को ज्यादा नंबर नहीं मिलते थे। जब वो तीनों पास हो जाते थे। उनके सर उनको इनाम देते थे। वो तीनों बहुत खुश थे। जब वो तीनों अपने-अपने घर जाते थे, वो तीनों अपने मम्मी-पापा से कहते थे कि हम सब पास हो गए तब उनके मम्मी-पापा खुश हो जाते थे।	पूर्वा एक आठ वर्ष की साहसी लड़की थी। वह अपने माता-पिता और अपने भाई के साथ गाँव में रहती थी। एक दिन पूर्वा के माता-पिता घर पर नहीं थे। पूर्वा घर के पास खेल रही थी। उसका भाई घर में सो रहा था। अचानक गाँव में आग लग गई। आग फैलते-फैलते पूर्वा के घर तक पहुँच गई। सभी लोग आग बुझाने का प्रयास कर रहे थे। अचानक पूर्वा को अपने भाई की रोने की आवाज सुनाई दी। वह अपने भाई को बचाने घर भागी। जैसे-तैसे वह अपने भाई को उठा लाई। इस प्रयास में वह कई जगह से झुलस गई थी पर उसने अपने भाई की जान बचा ली। सभी लोगों में उसके साहस की प्रशंसा हुई।

5.	एक स्कूल में बहुत सारे लोग पढ़ते थे। दो लड़के ऐसे थे कि उन्हें कुछ नहीं आता था। वह स्कूल जाते थे। मेम जो काम देती थी स्कूल के लिए वो करते नहीं थे। तभी मेम उन्हें मारती थी। जब छुट्टी हो जाती थी मेम घर के लिए काम देती थी। वो दोनों काम नहीं करते थे। दिन भर खेलते थे। जब सुबह होती थी दोनों स्कूल जाते थे और कुछ काम नहीं करते थे। एक का नाम सोनू था। एक का नाम जतिन था। तो दोनों काम नहीं करते थे। मेम से रोज पिटते थे और एक अक्षर भी नहीं लिखते थे जो मेम उन्हें बताती थी।	एक दिन की बात है। एक लड़का पतंग लेने गया था। जब वो पतंग लाया तब उसने पतंग में छेद किया फिर धागा बाँधने लगा तब उसने धागा बाँध दिया। जब वो छत पर चला गया तब वो पतंग उड़ाने लगा। जब वो उसकी पतंग आसमान में चली गई तब इतनी तेज हवा चली तब उसकी पतंग टूट गई और उसका धागा भी टूट गया और वो पतंग लेने लगा तो उसने एक पतंग ले ली। फिर वो घर आ गया तब उसने पतंग में छेद कर दिया। फिर वो धागा बाँधने लगा। फिर उसने धागा बाँध दिया। फिर वो छत पर चला गया फिर वो पतंग उड़ाने लगा। फिर उसकी पतंग के पास दो कौवे आए और उसकी पतंग फाड़ने लगे तब उन कौवों ने उसकी पतंग फाड़ दी और वो नीचे आ गया।

विद्यार्थियों के लेखन नमूनों के कुछ अवलोकन

पहले विद्यार्थी ने शुरुआती लेखन में 'मधुमक्खी का छत्ता' के इर्द-गिर्द कुछ लिखने की कोशिश की है। इसमें निरन्तरता व तारतम्य कम है। बच्ची एक मधुमक्खी के छत्ते को देखती है, बताती है, एक आदमी आ जाता है और कुछ बताता है। बस एक विवरण दिया गया है, पर ठीक से कोई बात नहीं उभरती। हालाँकि शुरुआत, मध्य व अन्त तो है, लेकिन पाठक को रोकने वाली कुछ बात नहीं है।

इसी विद्यार्थी की सत्र के अन्त की रचना को देखें तो उसने पुस्तकालय की किताब *मेंढक का नाश्ता* के आधार पर 'मगरमच्छ का नाश्ता' नामक कहानी बनाई है।

कहानी में अब एक तारतम्य है, तार्किक क्रमबद्धता है और एक शुरुआत व अन्त दिख रहा है। इसमें विद्यार्थी ने मगरमच्छ ने 'आँखें निकाल दीं' मुहावरे का बख़ूबी इस्तेमाल किया है। उसने किताब की शब्दावली व वाक्य संरचना का इस्तेमाल भी किया है। हम देखते

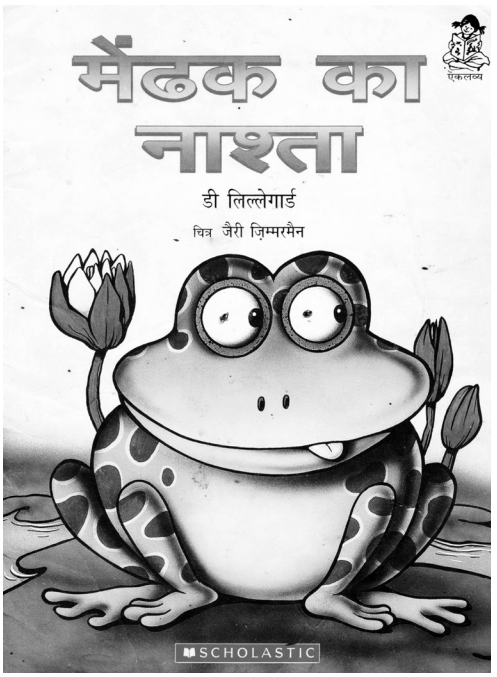

हैं कि बच्चे पढ़ी हुई कहानियों की संरचना को पकड़ते हुए नई कहानी भी बनाते हैं, अतः लिख पाने के लिए अधिक-से-अधिक पढ़ने की आवश्यकता है।

दूसरे विद्यार्थी ने शुरुआती लेखन में 'बिल्ली और चूहे' की जो कहानी बनाई है, उसमें मात्र जानकारी है, कुछ रोचक विवरण नहीं है। पहला चूहा भाग गया व दूसरा पकड़ा गया। हालाँकि, उसने तर्क दिया है कि चूहा चोटिल है। बाद की कहानी का नाम भी है व विवरण भी बहुत है, लेकिन यह पता नहीं चलता कि गिलहरी कहाँ रहती थी और उसके माता-पिता कैसे खोए। पर निश्चित तौर पर, यह पहले से बेहतर लेखन है। कहानी लिखने में ज़्यादा बातें 'चिड़िया और गिलहरी' कहानी में दिखती हैं।

तीसरे विद्यार्थी ने अपने लेखन की शुरुआत में 'साँप ने सोचा' की कहानी को किताब से ज्यों-का-त्यों उतारा था। कुछ बाद में बनाई

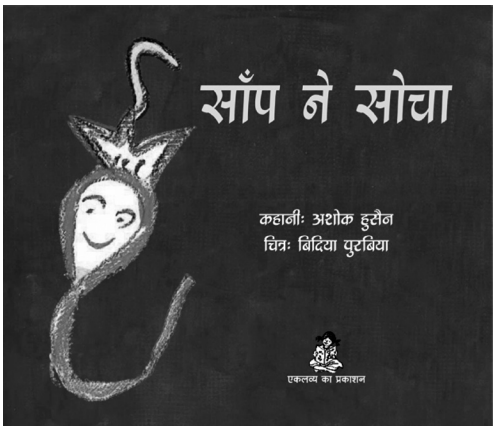

'लड़के की चतुराई' कहानी में कुछ नए बिन्दु जुड़े प्रतीत होते हैं, किन्तु इस कहानी में घटनाएँ एकदम से घट रही हैं और कहानी में कक्षा में सुनाई गई कहानी 'अजगर का पेट' का अंश भी है। बाद में लिखी रचना 'आम का पेड़' में यह स्पष्ट नहीं होता कि इस कहानी से वह क्या बताना चाहता है। उन्हें पहले आम का पेड़ मिला, फिर बेर का, फिर माँ भी गई और अचार बनाने की बात हुई। इसमें भी कोई सन्दर्भ नहीं है, बस सपाट रूप से बात कही गई है।

चौथा विद्यार्थी स्कूल का एक ऐसा बच्चा था जिसके बारे में हम कह सकते थे कि वह पाठक बनने की ओर तेज़ी से बढ़ रहा था। वह 'पढ़ने की घण्टी' में मन लगाकर पढ़ता था। इसके अलावा, किताबों पर चर्चा में अग्रणी रहता और किताबें घर भी ले जाता था। उसने सत्र के अन्त तक काफ़ी किताबें पढ़ ली थीं। इसका प्रभाव उसके लेखन में भी देखा जा सकता है। उसने लिखने का काम ख़ूब किया है। उसने शुरुआत किताब से नक़ल करने से ही की थी, पर जल्दी ही अपने मन से लिखना शुरू किया। शुरू वाली उसकी कहानी में बस तीन बच्चों का सरल-सा विवरण है और एक ही वाक्य पैटर्न बार-बार दोहराया गया है। कहानी पाठक में पढ़ने की कोई उत्सुकता नहीं जगा पाती।

सत्र के अन्त में लिखी उसकी कहानी 'साहसी पूर्वा' भी कहीं पहले से पढ़ी हुई कहानी ही लगती है। इसमें मौलिकता नज़र नहीं आती। वह पढ़ता बहुत है, लेकिन उससे बहुत बात नहीं हो पाई और शायद उसे फ़ीडबैक भी नहीं मिल पाया।

पाँचवें विद्यार्थी के लेखन का क़िस्सा यह था कि वह पढ़ तो लेता था, लेकिन लिखने से कतराता था। ऐसा अनुभव अकसर हम कई बच्चों के साथ महसूस कर सकते हैं। लिखने में उसका मन नहीं लगता था। उसकी लिखने की आदत कुछ समय बाद पड़ी जब उसने देखा कि उसके साथी भी कुछ-न-कुछ लिख रहे हैं। उसके शुरुआती लेखन को देखें तो उसमें यह बात निहित थी कि जो बातें हम किताब पढ़कर सीख व समझ रहे हैं, उन्हें अपने मन से लिखने का प्रयास कर रहे हैं। उनमें *बरखा* सीरीज़ की किताबें *हमारी पतंग, भुट्टा* के अंश हैं। इस प्रकार, उसने भी किताबों के आधार पर लिखने की शुरुआत की।

आगे उसने दो बच्चों के पढ़ने में मन न लगा पाने पर कहानी बनाने की कोशिश की है। उसका शीर्षक रखा है 'कहानी बनाई है', जिससे कहानी की कोई बात स्पष्ट नहीं होती। यह भी बस एक-सा ही विवरण है। इसमें क्रमबद्धता भी नज़र नहीं आती। इसमें शुरुआत है और बीच में शिक्षिका बच्चों को काम देती हैं, लेकिन ऐसा

कुछ नहीं होता जो बच्चों में रोचकता जगा सके। उसने बच्चों के नाम आगे लिखे हैं, वह पहले आ जाते तो और निरन्तरता बनती।

सत्र के अन्त के नमूने में कहानी का शीर्षक तो है, पर यह 'पतंग की कहानी', शुरुआत अच्छी होने व कुछ कल्पना के बावजूद एक ही जगह घूमती रहती है। शायद विद्यार्थी को यह स्पष्ट नहीं हो रहा है कि वह कैसे आगे बढ़े? इसके अलावा, लेखन में प्रवाह की ज़रूरत है। शिक्षक की मदद की आवश्यकता यहाँ महसूस होती है।

विद्यार्थियों का लेखन क्या दर्शाता है ?

बच्चों के उक्त लेखन में कुछ बातें स्पष्ट नज़र आती हैं। सबसे पहले, बच्चों ने समझा कि वे भी लिख सकते हैं। लिखने के लिए कोई विषय तो चाहिए। यह विषय कल्पित, कुछ वास्तविक और कुछ कल्पित, या वास्तविक घटना पर आधारित हो सकता है। यह बात भी समझ में आती है कि बच्चों का लिखना सीखना भी एक सोचा-समझा काम है। दूसरी बात यह कि नियमित मौक़े देने से लिखने की आदत भी बनती है और लिखने में कुछ आगे बढ़ा जा सकता है। यह भी अच्छा है कि बच्चों को पढ़ने के साथ-साथ लिखने के अवसर भी मिलें और वे लिखने का काम स्वयं करें।

हमने यह भी पाया था कि सभी बच्चों ने अपने लेखन की शुरुआत किताबों से देखकर लिखने से की। चूँकि ये बच्चे पढ़ना जानते थे तभी किताबों को पढ़कर लिख पाए। ये बच्चे किताब के वाक्यों की संरचना पकड़ सके और फिर वैसे ही लिखने का प्रयास करते दिखे जिसमें वे काफ़ी हद तक सफल भी रहे। कक्षा में ऐसे बच्चे हों जो पढ़ना नहीं जानते, लेकिन जो लिखना है वह उनके साथ दो-तीन बार पढ़ा जाए और तब लिखने को कहा जाए तो भी वे यह कर सकते हैं।

बच्चों के इस लेखन को हम एक प्रक्रिया के रूप में देख सकते हैं। हमने देखा कि बच्चों को लेखन में किताबों का साथ मिला जिनसे उनका पढ़ना-लिखना एक सार्थक माहौल में संचालित हो पाया। अकसर देखने में आता है कि पढ़ने-लिखने का कार्य सिर्फ़ पाठ्यपुस्तकों के टेक्स्ट और अभ्यासों के लिए होता है और इससे उसमें एक नीरसता-सी आने लगती है। स्कूल के शिक्षक का भी कहना था कि अधिक किताबें पढ़ने से नियमित रूप से आने वाले बच्चों के पढ़ने में काफ़ी सुधार देखने को मिला।

किताबों का साथ बच्चों को लिखने की प्रेरणा देता है। किताबों से बच्चे लिखने के विचार, शब्दावली व संरचनाएँ भी पकड़ते हैं। यह कुछ बच्चों के लेखन में दिखाई भी देता है। इस प्रक्रिया से यह समझ भी बनती है कि अगर बच्चों को नियमित रूप से पढ़ने-लिखने के मौक़े मिलें तो वे ख़ुद से लिखने का प्रयास करते हैं। इस तरह, लेखन में धीरे-धीरे वे अपने विचार भी प्रकट करते हैं। इस प्रक्रिया के आरम्भ में कुछ बच्चों के लेखन के विवरण हैं, फिर कुछ उनके अपने अनुभव हैं और वे धीरे-धीरे स्वतंत्र रूप से लिखने की ओर आगे बढ़े हैं। कुछ बच्चो के लेखन में शुरुआत में शीर्षक ही नहीं है, केवल 'कहानी बनाई है' लिखा है। लेकिन आगे उन्होंने शीर्षक भी लिखा। उनके

लेखन की बाद की रचनाओं में हम थोड़ा विस्तार भी देख पा रहे हैं। साथ ही, लेखन में बच्चे अपने पूर्व अनुभवों और अपनी भाषा को भी लाते दिखते हैं।

स्वतंत्र लेखन के लिए कुछ सुझाव

इन विद्यार्थियों के साथ शुरुआती कक्षाओं में पढ़ने-लिखने को लेकर कुछ अर्थपूर्ण काम नहीं हो पाया था। अतः बच्चों में लेखन क्षमताओं के विकास के लिए ज़रूरी हैं कि शुरुआती कक्षाओं से ही स्वतंत्र लेखन के प्रयास किए जाएँ। लेखन के शुरुआत की यह प्रक्रिया कुछ और भी हो सकती है। उदाहरण के लिए, अपना और अपने दोस्तों का नाम लिखना, किसी चित्र पर एक-दो वाक्य लिखना, अधूरी कहानी पूरा करना, कविता की ग़ायब हुई पंक्तियाँ लिखना, दिए गए कुछ शब्दों के द्वारा कहानी कहना और फिर लिखना, अपने अनुभव लिखना, आदि कई कार्य दिए जा सकते हैं। मेरा मानना है, यदि शुरुआत से ही ऐसी कोशिशें हों कि बच्चे पढ़ी हुई कहानी में अपने अनुभव और कल्पना जोड़ते हुए लिखें तो उनके लेखन में कुछ मौलिकता भी आएगी। मिसाल के तौर पर, 'बिल्ली के बच्चे' कहानी को पढ़ते हुए बिल्ली के बच्चों से जुड़े अपने कुछ अनुभव लिखें, 'तोता' कहानी पढ़ते हुए किसी पशु-पक्षी को पालने और उसे बचाने के अनुभव

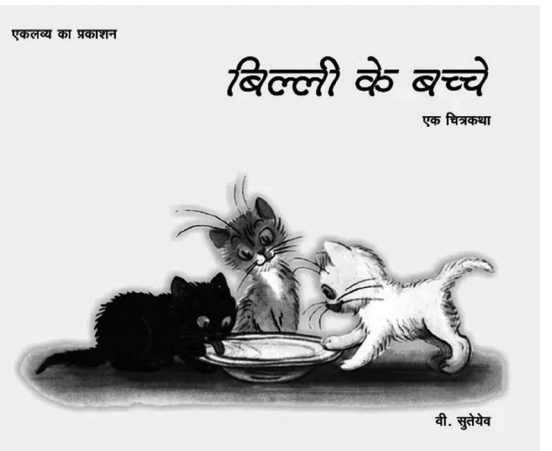

लिखें तो बच्चों के लेखन में मौलिकता देखने को मिलेगी। इस प्रकार, बच्चों को लिखना सिखाने के बहुत-से तरीक़ों पर सोचा जा सकता है। यह सब स्कूल की परिस्थिति, शिक्षकों की समझ, आदि पर भी निर्भर करता है।

इस प्रक्रिया में, मैंने यह भी महसूस किया कि अगर बच्चों के साथ उनके लिखने पर कुछ नियमित चर्चा होती तो हो सकता है उनके लिखने में और व्यापकता एवं विस्तार दिखता। मसलन, अधिकांश बच्चों ने यहाँ कहानी और अपने अनुभवों को ही लिखने की कोशिश की है। इस उम्र के बच्चों से चित्रकथा लिखने, कविता लिखने, अख़बार की ख़बर लिखने जैसे काम भी करवाए जा सकते हैं। बच्चों के कार्य को देखकर यह बात भी उभरती है कि शिक्षक को लिखना सिखाने के लिए एक नज़रिए की ज़रूरत होती है। इस मसले पर सामान्यतः कार्यशालाओं में बहुत अच्छे-से बात नहीं हो पाती। इस नज़रिए में लिखने का मतलब भी स्पष्ट होना ज़रूरी है। इसके साथ ही, लिखना सिखाने के तरीक़ों और उसके आकलन पर भी बात करनी चाहिए। केवल ऐसा न हो कि बच्चों ने कहानी के ढाँचे में कुछ लिखकर दे दिया तो काम हो गया।

यह बात भी समझ में आई कि इस कार्य में लिखने के मौक़े देना तो अच्छा है, लेकिन इसपर एक योजना के साथ काम करने में शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। लिखने के मौक़े मिलने के बाद उन्हें शिक्षकों के सहयोग की ज़रूरत पड़ती है।

इन बच्चों के लेखन पर कक्षा में अकसर उनसे कोई बात नहीं होती थी। इस कारण बच्चे ख़ुद से लिखते रहे, और अन्त तक आते-आते, माने लगभग छह महीनों बाद भी, उनके लेखन की गुणवत्ता में बहुत सुधार नहीं दिखाई पड़ता। अतः यह ज़रूरी है कि पढ़ने और लिखने के अभ्यास के दौरान और उसके बाद शिक्षक बच्चों से उनके द्वारा किए गए काम के बारे में बात करें और उन्हें, उससे आगे बढ़ने में मदद करें, जहाँ वे हैं। मिसाल के तौर पर, बच्चे एक-दूसरे को अपना लेख दिखाएँ, बताएँ कि कहाँ रिक्तता लग रही है। इस स्तर पर वाक्यों की संरचना और मात्राओं के बारे में भी बात हो सकती है। शिक्षक कह सकते हैं कि लिखे को फिर से पढ़ो, क्या कहीं उन्हें कुछ ग़लत लग रहा है, यदि हाँ, तो उसे चेक करें, आदि।

शायद बच्चों को अच्छे लेखन के नमूने दिखाने से लाभ हो। यहाँ इसके न हो पाने के मुख्य कारण व्यवस्थागत (एकल शिक्षक व ढेरों प्रशासनिक काम भी) व स्पष्टता की कमी ही कहे जा सकते हैं।

स्पष्टता, यानी यह समझ कि भाषा सिखाने का क्या मतलब है, पढ़ना-लिखना सिखाने का क्या आशय और क्या उद्देश्य हैं? इसके बाद यह समझ कि अच्छी पढ़ने-लिखने की प्रक्रियाएँ क्या होंगी? इसी से वे समझ पाएँगे कि बातचीत किसपर करें और कैसे? यह भी लगता है कि यह सब करने के लिए शिक्षक की भी पढ़ने-लिखने में रुचि होनी चाहिए। ख़ुद पढ़ेंगे-लिखेंगे, तभी वह पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया को एक सहज रूप में देख पाएँगे।

बच्चों के लिखना सीखने की शुरुआत पहली कक्षा से ही होनी चाहिए। साथ ही, इसे बच्चों की अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाना चाहिए न कि केवल सुन्दर लिखावट के रूप में। इसकी शुरुआत चित्र बनाने से हो सकती है, और बच्चों से किताब अथवा उन्हें सुनाई गई अन्य कहानियों पर चित्र बनवाए जा सकते हैं।

आख़िर में, शिक्षकों को वर्तनी व व्याकरण की ग़लतियों पर अतिरिक्त ध्यान की उपादेयता पर भी सोचना होगा। ग़लतियों पर कितना ध्यान दें, और किस स्तर पर पहुँचने के बाद इसपर ध्यान दें? गोला लगाएँ या नहीं? सवाल यह है कि यदि सुधारेंगे नहीं तो क्या बच्चा अशुद्ध ही लिखता रहेगा! जिस तरह बोलने में सुधार की ज़रूरत नहीं होती और धीरे-धीरे सुधार हो जाता है, कुछ हद तक लिखने में भी वैसा ही होता है। लिखने में सुधार के लिए चौथी-पाँचवीं के स्तर से व्यवस्थित रूप में काम की ज़रूरत है। बच्चों के लेखन के नमूनों पर उनसे चर्चा की जा सकती है। इस बातचीत में उनके विचारों को उभारने का प्रयास हो न कि शब्दों को दोहराने का। इसके अलावा, नियमित रूप से पढ़ने से बच्चों के लेखन में भी सुधार होता है और वे स्वतः वर्तनी भी सीखते रहते हैं। लेखन में बच्चों के विचार, उनकी नई शब्दावली और कल्पना देखना ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है।

इस आलेख को लिखने की प्रेरणा रामकिशोरजी द्वारा अपने विद्यालय में बच्चों के लिए की गई सार्थक पढ़ने-लिखने के मौक़े देने की पहल से मिली है। इसके लिए उनका बहुत आभार।

कमलेश चंद्र जोशी प्राथमिक शिक्षा से लम्बे समय से जुड़े हुए हैं। प्राथमिक शिक्षा से जुड़े विभिन्न विषयों-शिक्षक शिक्षा, बाल साहित्य, प्रारम्भिक भाषा एवं साक्षरता आदि में गहरी रुचि है। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, ऊधम सिंह नगर में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : kamlesh@azimpremjifoundation.org